आदिवासी नारी के जीवन को तबाह करती अंधविश्वास की 'डायन'

डॉ. सरिता बाबासाहेब बिडकर
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
डॉ. घाळी कॉलेज, गडहिंग्लज,
जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
ई-मेल : saritabeedkar78@gmail.com
दूरभाष क्रमांक: 9423858410

शोधालेख का सार

महाश्वेता देवी का 'आदिवासी कथा' कहानी-संग्रह आदिवासी जीवन पर आधारित है। इसके 'डायन' कहानी के माध्यम से लेखिका ने आदिवासी समाज में व्याप्त अंधविश्वास की समस्या को बेहतरीन ढंग से उठाया है। अंधविश्वास के चलते आदिवासी महिलाओं का जीवन किस प्रकार तबाह हो जाता है, इसे लेखिका ने चंडी के माध्यम से चित्रित किया है।

बीज शब्द: आदिवासी समाज में अंधविश्वास, महाश्वेता देवी, 'डायन' कहानी।

वर्तमान समय में हम भलेही विकास की बड़ी-बड़ी बातें करें लेकिन आज भी आदिवासी समाज समेत अनेक पिछड़ी जनजातियाँ विकास से कोसों दूर हैं। अशिक्षा, अज्ञान और आर्थिक अभाव उनकी समस्याओं की मुख्य जड़ है। इसी के चलते उनके जीवन में अनेक समस्याएँ उपजती हुई दिखाई देती है। लेखिका महाश्वेता देवी ने अपने 'आदिवासी कथा' कहानी-संग्रह के माध्यम से इन्हीं समस्याओं के जड़ तक पहुँचने का काम किया है। इस कहानी-संग्रह में कुल 15 कहानियाँ हैं। इनमें से एक है- 'डायन।' इसके माध्यम से लेखिका ने अंधविश्वास की समस्या पर प्रकाश डाला है। अंधविश्वास की डायन किस प्रकार आदिवासी नारियों का जीवन तबाह कर देती है, इसका चित्रण चंडी के माध्यम से किया गया है। इस संदर्भ में 'दै. अमर उजाला' में लिखा है- "मशहूर कथा लेखिका महाश्वेता देवी की ओर से रचित कहानी डायन में औरत की स्थिति को बखूबी चित्रित किया गया है। जिसमें बताया गया है कि पुरुष प्रधान समाज में किस तरह से एक औरत को प्रतिशोध की आग में झोंक कर उसे डायन करार देकर उसकी जिंदगी को नरक बना दिया जाता है।"[1] इसी प्रकार समाज में व्याप्त अंधविश्वास के चलते जान-बूझकर नारी का शोषण किया जाता है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका चंडी डोम जाति से संबंधित है तथा वह पारंपरिक पेशे के मुताबिक पाँच साल से कम उम्र के बच्चों को दफनाने का काम करती है। इसी चंडी को अशिक्षा, अज्ञान के चलते समाज द्वारा उसे किसप्रकार डायन साबित कर समाज से बहिष्कृत कर पगली की तरह जीवन जीने के लिए विवश किया जाता है, इसका बखूबी ढंग से चित्रण प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने किया है।

यह कहानी अंधविश्वास की शिकार चंडी, उसका बेटा भगीरथ और पति मलिन्दर इन तीनों के इर्द-गिर्द घूमती है। इसमें प्रसंगानुकूल चंडी की सौतन, सौतन की दो बेटियाँ गैरवी और सैरभी, चंडी के पिता गंगापूत, गाँववाले, सरकारी कर्मचारी आदि का चित्रण भी मिलता है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग करते हुए भगीरथ और मलिन्दर के माध्यम से चंडी की जीवन-कहानी चित्रित की है। आदिवासी समाज में अंधविश्वास बड़े पैमाने पर है। इस अंधविश्वास के चलते ही चंडी को उसे डायन साबित कर उसे समाज से बहिष्कृत किया जाता है। समाज के दवाब के चलते खुद पति मलिन्दर गाँव में ढिंढोरा पीटकर अपनी पत्नी को डायन घोषित करता है। इस संदर्भ में लेखिका ने लिखा है-"...पूरे गाँव को थर्रा देनेवाली आवाज में वह ढोल पीटता हुआ चीख उठा, "मैं...मलिन्दर गंगापूत, शोहरत देता हूँ! ऐलान करता हूँ...ये...मेरी बहुरिया डायन हो गई है....डायन!"[2] इस प्रकार अंधविश्वास के चलते पति ही अपनी पत्नी को डायन घोषित करता है। लोगों का मानना है कि डायन छोटे बच्चों की जान लेती है। इसलिए चंडी की नजर तक खुद के बच्चों पर पड़ने नहीं देते। उसे गाँव से दूर कहीं एक झोपड़ी बनाकर रखा जाता है। न उसके खाने-पीने का खयाल रखा जाता है न उसके स्वास्थ्य का। मरते दम तक उसे इन जीवन यातनाओं को भुगतना पड़ता है। इस दर्दनाक सच का चित्रण लेखिका महाश्वेता देवी ने किया है।

प्रस्तुत कहानी की डायन चंडी का भगीरथ नाम एक बेटा भी है लेकिन उसे भी मालूम नहीं है कि उसकी माँ डायन है। क्योंकि वह छोटा था तब ही उसकी माँ को डायन घोषित किया था। चंडी का पति मलिन्दर एक लाशघर में सरकारी नौकरी करता है। मलिन्दर के माध्यम से लेखिका ने आदिवासी समाज में अशिक्षा का चित्रण किया है। उस इलाके में मलिन्दर ही ऐसा व्यक्ति है, जो थोड़ा-बहुत पढ़ा है लेकिन बाकी लोग दस्तखत तक नहीं कर सकते। सरकारी नौकरी होने के कारण समाज में उसका रोब है। वह

अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता है लेकिन पत्नी को समाज द्वारा डायन साबित करने से उसकी पूरी जिंदगी ही बदल जाती है। पत्नी की हालत देखकर उसे बहुत दुख होता है। वह चिंता करते हुए कहता है- "अँधियारे में डरपत है बेचारी! जो औरत अँधियारे से खौफ खाती थी, उसे ही विधाता ने डायन बना दिया? अब तो उसे मौत ही आ जाए, तभी उसे शांति मिलेगी।"[3] इस प्रकार एक अच्छी औरत को डाइन बनाने के कारण पति मिलिन्दर को भी बुरा लगता है।

चंडी डायन कैसे बन जाती है? इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी में दिया है। चंडी के पिता डोम जाति से संबंधित होने के कारण वे पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों पर अंतिम-संस्कार करने का काम करते थे। इसके बदले में गाँववाले उन्हें जो भीख देते उसी पर उनकी जीविका चलती थी। यह काम तो लोग उनसे करवाते थे लेकिन भीख के लिए जब वे गाँव से घूमते तब लोग उन्हें बहुत हेय दृष्टि से देखते। उनकी नजर भी बच्चों पर पड़ने नहीं देते। थोड़ा-बहुत देकर उन्हें आगे चलता करते। पिता की मृत्यु के बाद उनके खानदान में कोई दूसरा आदमी न होने के कारण यह जिम्मेदारी चंडी पर आ जाती है। श्मशान में खुद गड्ढा खोदकर उसे यह बच्चे दफनाने का करना पड़ता है। वह लाश कोई सियार या अन्य जानवर न खाए इसलिए उसकी रखवाली भी करनी पड़ती है। मलिन्दर से शादी के बाद भी चंडी यह काम जारी रखती है। उसे बच्चा होने के बाद उसका इस काम में मन नहीं लगता। जब वह किसी का बच्चा दफनाने जाती तो उसे रह-रहकर अपने बच्चे की याद आती रहती। दूसरी ओर समाज की हेय दृष्टि के चलते भी उसे हमेशा लगता कि यह काम छोड़ दें।

एक दिन कुछ लोग उसकी नजर से गाँव के एक बच्चे की मौत होने का आरोप लगाकर उसे डायन कहने लगते हैं। इसी में एक दिन रात के समय दफनाई लाश की रखवाली के लिए गई चंडी पर लाश को खाने को जाने का आरोप लगाया। डायन का सिक्का और गर्द बनाया जाता है। अंधविश्वास के चलते पति मलिन्दर भी लोगों की बात मानकर अपनी पत्नी को डायन घोषित कर हमेशा-हमेशा के लिए घर से बाहर निकालता है। गाँव से दूर एक रेल पटरी के बाजू में छोटी-सी टूटी-फुटी झोंपड़ी बनाकर उसमें रखता है। इस प्रकार एक अच्छी औरत को समाज और पति द्वारा डायन घोषित किया जाता है।

डायन खाएगी इस डर से लोग उसकी झोपड़ी के पास तो जाने की बात दूर ही लेकिन उसकी परछाई से भी डरने लगते हैं। एक आदमी डरते-डरते हफ्तेभर में एक बार आकर आवश्यक सामान उसकी झोंपडी के पास लाकर रख जाता है। झोंपडी में अकेली बेचारी चंडी अपने-अपने में ही खोयी-खोयी रहने लगती है। उसे नहाने की सुध रहती है न खाने की। एक पगली की तरह उसकी हालत हो जाती है। उसे उस झोंपडी में अकेले-अकेले डर लगता है। जब चंडी सड़क से निकलती है तब अंधविश्वास के चलते किस प्रकार लोगों में प्रतिक्रिया उमटती है, इस संदर्भ में महाश्वेता देवी लिखती है- "डायन जब सड़क पर निकलती है, तो टिन पीट-पीटकर सूचना देती हुई जाती है। किसी बच्चे या जवान-जहान मर्द को देखते ही, वह अपनी नजरों से उनकी देह का बूँद-बूँद खून चूस लेती है। इसीलिए तो डायन को नितांत अकेली रहना पड़ता है। डायन की आहट मिलते ही जवान-बूढ़े-मर्द, सबके सब रास्ता छोड़कर, इधर-उधर आड़ में छिप जाते हैं।"[4] इस प्रकार लोग डायन की परछाई से भी डरते हैं। फिलहाल हम आजादी का अमृत-महोत्सव मना रहे हैं, तकनीकी युग में जी रहे हैं किंतु आज भी आदिवासी इलाके में यह प्रथा जारी है। कई महिलाओं को डायन साबित करने की खबरें अखबार में पढ़ने को मिलती है। अत: यह गंभीर विषय है, सोचने के लिए बाध्य करता है।

अशिक्षा, अज्ञान की गर्ता में फँसे इस आदिवासी समाज की स्थिति की ओर निर्देश करते हुए डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते हैं-"जंगल तथा दुर्गम भागों में रहनेवाली यह जनजातियाँ साधन-सुविधाओं से वंचित तो हैं ही लेकिन अज्ञान और अशिक्षा के कारण अपनी रूढ़ि और परंपराओं के चंगुल से बाहर नहीं आ रही है।"[5] इस प्रकार अशिक्षा, अज्ञान के चलते आदिवासी समाज की स्थिति बहुत गंभीर दिखाई देती है।

भगीरथ को जब मालूम नहीं था कि उसकी माँ डायन है, तब वह डायन खा जाएगी इसलिए उसके पास जाने से डरता था। डायन के संदर्भ में उसके मन में भी अनेक गलतफहमियाँ थीं। भगीरथ के मन में होनेवाले विचारों के संदर्भ में महाश्वेता देवी लिखती हैं- "डायन तो मिट्टी खोदकर, मरे हुए बच्चे निकाल लेती है! डायन भला इंसान होती है? खोदकर निकाले हुए मुर्दा बच्चे को प्यार करती है, अपना दूध पिलाती है। डायन की नजर पड़ जाए, तो पूरा का पूरा पेड़ तक, चरमराकर सूख जाता है।"[6] इस प्रकार समाज में डायन के संदर्भ में अनेक कथाएँ जुड़ी दिखाई देती है।

जब एक दिन पिता से मालूम होता है कि चंडी उसकी माँ है तब वह उसके साथ संवाद स्थापित करने का प्रयास करता है। अपनी माँ की यह बुरी हालत देखकर उसे बहुत बुरा लगता है। कहानी के अंत में यही चंडी जब अपनी जान देकर सावधानता से रेल को दुर्घटना से बचाती है और रेलवे विभाग उसे मेडल घोषित करता है तब सभी को उसका अभिमान लगता है।

निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महाश्वेता देवी ने अपनी 'डायन' कहानी के माध्यम से आदिवासी समाज में व्याप्त अंधविश्वास की समस्या को बेहतरीन ढंग से उठाया है। अंधविश्वास के चलते आदिवासी महिलाओं का जीवन किस प्रकार तबाह हो जाता है, इसे लेखिका ने यथार्थ ढंग से चित्रित किया है। आदिवासी तथा पिछड़े इलाके में यह अनिष्ट परंपरा आज भी है, इस बात की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है, पाठकों को सोचने के लिए मजबूर किया है। अंधविश्वास के कारण हँसते-खेलते जीवन बर्बाद किया।

संदर्भ :

1. https://www.amarujala.com/himachal-pradesh/mandi/dayan-drama-tells-a-story-of-women
2. महाश्वेता देवी, आदिवासी कथा, डायन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004, पृष्ठ 38
3. वही, पृष्ठ 27
4. वही, पृष्ठ 24
5. डॉ. अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ 181
6. महाश्वेता देवी, आदिवासी कथा, पृष्ठ 26